अध्याय पांच

उद्योग

प्राचीन उद्योग—खैराबाद जो सत्रहवी और अठारहवी शताब्दी में एक प्रसिद्ध वस्त्र-निर्माण केन्द्र था, के जुलाहे अपनी कारीगरी के लिये बहुत समय से प्रसिद्ध हैं। 1640 में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी ने खैराबाद और दरियाबाद में हथकरघे से बुने हुये वस्त्र को इंग्लैण्ड, फ्रांस, हालैंड और यूरोप के कुछ अन्य देशों तथा पूर्वी अफ्रीका और पूर्वी एशिया के देशों को भेजने के लिये लखनऊ में एक फैक्टरी की स्थापना की। यूरोपीय सौदागरों ने इस केन्द्र में तैयार किये गये वस्त्र का वर्णन केरियाबॉड्स (Kerriabauds) के रूप में किया है। अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में सूती उद्योग निरन्तर सफलता की ओर अग्रसर होता गया और खैराबाद केलिको, छींट और गजी (सफेद मोटा वस्त्र) के निर्माण का केन्द्र बना रहा। 1856 में इस जिले पर अंग्रेजों के अधिकार होने तक यह स्थान इस विशेष उद्योग के लिये सुविख्यात था जैसा कि अवध के प्रशासन से संबंधित दस्तावेजों (1861) से स्पष्ट होता है जिसमें (पृष्ठ 102 पर) यह उल्लेख किया गया है कि नगर में 889 वस्त्र सौदागर और 6,949 रफूगर, जुलाहे (बुनकर), छीपी (छपाई करने वाले), धुनिया, रंगरेज आदि थे, ये सभी रुई और सूती तागे के उद्योग से संबंधित थे। उन दिनों जिले में कपास प्रचुर मात्रा में उगायी जाती थी। सूत की बुनाई और कपड़ा छपाई का कार्य बिसवां और कुछ अन्य स्थानों में भी किया जाता था। परम्परागत पुराने करघे प्रयोग में लाये जाते थे, परन्तु वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में जिले का अधिकांश हथकरघा व्यापार अहमदाबाद, कानपुर और आगरा से आयात किये गये तागे पर निर्भर था। 1922 में किये गये एक सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ कि 10,23,583 गज सूती चारखाने और गाढ़े का कपड़ा सीतापुर से खीरी और लखनऊ के पड़ोसी जिलों को भेजा गया था।

बिसवां ताजिया बनाने का प्राचीन केन्द्र है और मुहर्रम के समय इन ताजियों की आज भी अत्यधिक मांग रहती है। 1922 में लगभग 20,000 ताजिये बेचे गये थे जिनका मूल्य प्रति ताजिया 50 नये पैसे से 200 रुपये तक था। यह स्थान मिट्टी के बर्तनों के लिये भी सुविख्यात था, सुन्दर घड़ो तथा सामान्य प्रयोग में आने वाले अन्य बर्तनों पर गहरे हरे रंग के तल पर फूल-पत्तियों का अत्यन्त कुशलता से चित्रण यहां की एक विशेषता थी। यह शिल्प इतनी उच्चकोटि तक पहुंच चुका था कि 1886 में लन्दन में आयोजित एम्पायर एक्जिबिशन (साम्राज्य प्रदर्शनी) में बिसवां के एक कलाकार बन्दू को मिट्टी के बर्तन पर कलापूर्ण प्रदर्शन के लिये कांसे के पदक से पुरस्कृत किया गया था। मिट्टी के बर्तन के निर्माण का काम महराजनगर और कुतबनगर में भी होता था, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इस जिले में निर्मित बर्तन बिक्री के लिये बाहर नहीं भेजे जाते थे, वरन् मुख्य रूप से वे उपहार के लिये ही बनाये जाते थे। तांबे, जस्ते और सीसे की एक मिश्रित धातु के बर्तनों का निर्माण केवल इस स्थान पर ही नहीं, अपितु महराजनगर और कुतुबनगर में भी होता था। यह जिला नक्काशीदार दरवाजों के लिए भी प्रसिद्ध था, जिन पर साधारण बेल-बूटे बने होते थे। ये सामान्यतया साल की लकड़ी के बने होते थे जिसे (काजल एवं सरसों के तेल के संमिश्रण के प्रयोग से) काला रंग दिया जाता था जिससे वे आबनूस के सदृश दिखाई पड़ने लगते थे। इसके अलावा यहां मनिहार भी थे जो पिघली हुई लाख और रेह के मेल से चूड़ियां बनाते थे और उन्हें लाख के बने हुये रंग से रंगते थे। रेह और लाख स्थानीय रूप से उपलब्ध हो जाता था। 1922 में चौबीस चूड़ियों तथा एक जोड़े कंगन का मूल्य 37 नये पैसे से लेकर 50 नये पैसे तक था। 1869 में जिले में गोटा बनाने वाले तथा सोने और चांदी के तारों से कसीदा काढ़ने वालों की संख्या 1,728 थी।

इस जिले के कई स्थानों की भूमि, चूना, नमक और ईंट लायक मिट्टी की खदानों के लिये समृद्ध है। चूना कंकड़ के ढेर से बनाया जाता है और पत्थरों अथवा ईंटों की चिनाई के लिये चूना, बालू तथा पानी से बने संमिश्रण का प्रयोग सीमेंट और राल के स्थान पर अच्छे गारे का काम करता है और खैराबाद की बहुत सी पुरानी इमारतों में इस सामग्री का प्रयोग किया गया है। खैराबाद के निकट कुछ गांवों में लोनियां लोग शोरा तैयार किया करते थे, परन्तु 1922 में की गई परिगणना के अनुसार पांच महीने के मौसम (सीजन) में एक लोनिया को केवल 46 रुपये की आय होती थी जिससे इस उद्योग की प्रगति निरुद्ध हो गई।

विद्युत् (पावर)

जलविद्युत—जिले में उद्योग के लिये विद्युत् शारदा जलविद्युत् जालक (ग्रिड) से प्राप्त होती है। इसका उत्पादन नैनीताल जिले में खटीमा पावर हाऊस में किया जाता है, जहां से इसे 132 हजार वोल्ट की दर से संप्रेषित (ट्रांसमिट) किया जाता है और दोहना सब-स्टेशन पर प्राप्त किया जाता है जो मुख्य वितरण केन्द्र है। इस स्थान से संप्रेषण 66 हजार वोल्ट को दो लाइनों में विभक्त हो जाता है— एक लाइन शाहजहांपुर-हरदोई-संडीला-लखनऊ के मार्ग पर और दूसरी लाइन शाहजहांपुर-मोहम्मदी-नेरी-सीतापुर-लखनऊ मार्ग पर जाती है। शाहजहांपुर-मोहम्मदी-नेरी-सीतापुर-लखनऊ मार्ग वाली लाइन से इस जिले के लिये विद्युत् प्राप्त की जाती है। सीतापुर सब-स्टेशन पर उच्च विद्युत् दाब (हाई वोल्टेज) को एक ट्रांसफार्मर द्वारा कम किया जाता है और तब इसे जिले में वितरित किया जाता है। अप्रैल, 1955 में पुराने टरबाइन स्टेशन को राजकीय संस्था बना दिया गया और मार्च, 1958 से डी0सी0 विद्युत् के कनेक्शनों को ए0सी0 कनेक्शनों में परिवर्तित किया जा रहा है। सीतापुर नगर में 1959-60 में 139 औद्योगिक और 1,747 घरेलू उपभोक्ताओं को